स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

उत्तर प्रदेश सरकार

सोन स्कूल
कायाकल्प

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

BaLA पुस्तिका

Piramal
knowledge action care

सत्यमेव जयते

NITI Aayog
(National Institution for Transforming India),
Government of India

आमुख

छात्रों के ठहराव एवं मनोरंजनपूर्ण शिक्षा के लिए बाला **(BaLA)** एक नया आयाम है। **BaLA- Building as Learning Aid** यानि विद्यालय भवन सीखने–सिखाने का माध्यम। गत वर्षो में अलवर के अनेकों विद्यालयों में **BaLA** एक्टिविटी का कार्य किया गया जिसके अभूतपूर्व परिणाम जैसे छात्र संख्या वृद्धि एवं समुदाय का झुकाव स्कूलों के प्रति देखने का मिला।

बाला गतिविधियों का अर्थ है कि विद्यालय के भीतर मौजूद हर वस्तु का शिक्षण सामग्री के रूप में इस्तेमाल करना। जैसे :–जमीन, दीवार, सीढ़ी, पिलर्स, फर्नीचर, पंखे, खिड़कियां, दरवाजे, पेड़–पौधे, खुला मैदान, चार–दीवारी आदि। उदाहरण के तौर पर सीढ़ियों पर गिनती लिखी हुई हों तो बालक सीढियों में उतरते–चढ़ते खेल–खेल में गिनती सीख सकते हैं। फर्श पर बनी खगोलीय, ज्यामितीय आकृतियाँ व अन्य खेलों के द्वारा बालक सहज सीखने की कोशिश करेंगे। छात्र पिलर्स पर बने स्केल से अपनी व दूसरों की लंबाई नापते नजर आयेंगे। दरवाजे के साथ कोण मापक से कोण नापने का ज्ञान सहज होगा।

प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यालय भवन के कुर्सी **(Plinth)** तक एवं इससे तीन फीट ऊपर तक के भाग को मरम्मत की अधिक आवश्यकता होती है। संयोगवश यही वह ऊंचाई है जो इन स्कूली बच्चों को सुलभ होती है। इस जगह का ही सर्वाधिक उपयोग बाला में किया जा सकता है। इस जगह पर अभ्यास बोर्ड, चौखाने वाले बोर्ड, बिन्दु बोर्ड बनाए जा सकते हैं जिन पर बालक स्वयं अभ्यास कर सकते हैं। दरवाजों पर चित्र बनाकर उनका उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार विद्यालय के प्रत्येक अवयव का उपभोग बाला में किया जा सकता है। साईकिल, बस, ट्रक, जीप, कार के अनुपयोगी टायरों द्वारा अनेक खेल तैयार किए जा सकते हैं। रैम्प में रेलिंग का उपयोग बच्चों के लिए टेलीफोन का खेल भी हो सकता है। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी चित्र बालकों में जागरूकता पैदा करेंगे। कुछ दृश्य भ्रम के चित्र भी बालकों को आकर्षित करेंगे। झूला, फिसलनी एवं अन्य खेलने के साधन शाला में ही विकसित करने होंगे।

शिक्षक समाज एवं विद्यालय की वह कड़ी है जो इस देश को नई दिशा दे सकता है। शिक्षक का प्रभाव बालक पर सबसे ज्यादा नज़र आता है क्योंकि शिक्षक ही बालक की मनोदशा को भली प्रकार समझता है। ऐसे अनेक कार्य करते हुऐ शिक्षक विद्यालय की स्थिति एवं उपलब्ध संसाधनों से ही बाला का नया रूप प्रदान कर सकता है। प्रायः देखा जाता है कि बालक स्कूल छोड़कर गलियों में कंचे या अन्य खेल खेलते नज़र आते हैं। जब शाला में ही उन्हें खेल–खेल में ही पढ़ाई की सुविधा मिलेगी तो कोई कारण नहीं जो ये बालक शाला में न रूके बल्कि छुट्टी के बाद भी इनका घर जाने को मन नहीं करेगा। यदि बाला कार्य के साथ समाज को भी जोड़ा जावे और समाज के लोगों को बाला के उद्देश्य बताए जाए तो समाज का भी सहयोग अवश्य मिलेगा और शाला में बालकों द्वारा होने वाली तोड़–फोड़ नहीं करने के प्रति जागरूकता पैदा होगी।

आओ–हम सभी मिलकर बाला गतिविधि के द्वारा इन नन्हीं कलियों को सुन्दर फूल में परिवर्तित करने में सहयोग करें। अपने कर्त्तव्यनिष्ठ समर्पण के साथ। तभी आने वाला कल हमारा स्वागत करेगा।

विद्यालय में बाला योजना बनाने हेतु सुझाव

1. **सबसे** पहले विद्यालय परिसर का मौका मुआयना करें एवं उपलब्ध खाली जगह, दीवार, फर्श, बरामदा, कक्ष, सीलिंग, सीढ़ियां, दरवाजे, खिड़कियां, शौचालय, पानी का स्थान, ब्लैक–बोर्ड, फर्नीचर, पेड़–पौधे, रसोईघर एवं आंगन के बाला में उपयोग की दृष्टि से रूपरेखा तैयार करें।
2. **रूपरेखा** तैयार करते समय भविष्य में होने वाले निर्माण कार्य का भी ध्यान रखा जावे। रूप रेखा इस तरह से तैयार करें कि सम्पूर्ण स्कूल एक यूनिट में हो जिससे आगे कोई तोड़–फोड़ न करनी पड़े। बाला के अधिकतम अवयवों को शाला में स्थापित करने की योजना बनाएं। योजना निर्माण के समय विद्यालय प्रबन्धन समिति, समुदाय, जनप्रतिनिधि, कनिष्ठ अभियन्ता एवं अन्य विशेषज्ञों का भी सहयोग लिया जा सकता है। तत्पश्चात् तैयार प्रारूप का विद्यालय प्रबन्धन समिति से अनुमोदन कराकर, प्रधानाध्यापक कक्ष में एक चार्ट बनाकर टांग दिया जावे। इससे भविष्य में शाला में होने वाले निर्माण कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से कर सकते हैं।
3. **योजना** तैयार करने के पश्चात् उपलब्ध राशि एवं तखमीने के अनुसार भविष्य में कार्य करवाते जावें।
4. **यदि** निर्माण कार्य नया किया जा रहा है तो निर्माण में ही बाला विचारों को प्रारम्भ से ही डाला जावे। यदि मरम्मत की आवश्यकता है तो उसके साथ ही बाला विचार भवन में डाले जाने चाहिए। जैसे :–फर्श को रिपेयर किया जा रहा है तो उसमें ज्यामितीय आकृतियां कारीगर द्वारा स्थाई रूप से बनवाई जा सकती है।
5. **पेन्टर** द्वारा किए जाने वाले कार्य में सावधानी की आवश्यकता है। जैसे रंग अच्छी किस्म के हों एवं जिस धरातल पर यह कार्य किया जा रहा है उसका आधार सही प्रकार तैयार किया गया हो अन्यथा थोड़े दिनों में ही रंग पपड़ी बनकर हट सकता है।
6. **समस्त** कार्य कारीगर / पेन्टर के भरोसे नहीं छोड़कर, शिक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कार्य में कोई त्रुटि तो नहीं है।
7. **बाला** कार्य करवाते समय बालकों के स्तर का विशेष ध्यान रखें। बाला कार्य इस प्रकार का हो जिसमें बालकों की अन्तः क्रिया अधिकाधिक हो सके।
8. **विद्यालय** को अलग–अलग हिस्सों में बांटकर प्रारूप तैयार करें। जैसे :–
   1. कक्षा–कक्ष/लहर कक्ष 2. बरामदा एवं सीढ़ी 3. चारदीवारी व मुख्य द्वार
   4. आंगन 5. शौचालय 6. रसोईघर 7. पेयजल
9. **बाला** में इस प्रकार के विचारों का निर्धारण करें कि बालक खेल–खेल में मानसिक क्रिया करें जिससे उन्हें कुछ सोचने व करने की चुनौती मिल सके। इसके द्वारा मिला ज्ञान अधिक स्थाई होगा।
10. **बालक** खेल–खेल में सभी विषयों को सीख सके, इसलिए बाला में प्रत्येक विषय का ध्यान रखना चाहिए।

विद्यालय में किए जाने वाली बाला गतिविधियाँ

कक्षा–कक्ष / लहर कक्षः–

1. सर्वप्रथम कक्षाओं का निर्धारण किया जाए कि कौन सी कक्षा किस कक्षा–कक्ष में बैठेगी। कमरे का चुनाव बालकों की उम्र व कक्ष की भौतिक स्थिति के अनुसार किया जाए।
2. कक्ष के बाहर दरवाजे के ऊपर दीवार पर बरामदे वाले भाग में कक्ष का नाम लिखवाए। उसके नीचे कक्षा 1, 2, 3 आदि अंकित की जाए। दरवाजे के ऊपर या साईड में दीवार पर कमरे का नक्शा एवं कमरे की माप भी लिखी जा सकती है। कमरों पर नाम महापुरूषों / वैज्ञानिकों आदि के नाम पर रखा जा सकता है।
3. कक्षा 1 व 2 के कमरे में बालकों की पहुँच तक दीवारों पर बोर्ड बनवाये जा सकते हैं। जिन पर बालकों के द्वारा चॉक से लिखने हेतु लाइनिंग करवाएं, चौखाने वाले बोर्ड एवं बिन्दुओं को मिलाने वाले बोर्ड बनवाये जिससे बालक अपनी कल्पना से आकृति बना सकेंगे एवं खाली समय में कुछ लिखने का अभ्यास भी कर सकेंगे। कक्ष में गिनती, पहाड़े, हिन्दी एवं अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर आकर्षक रूप एवं डिजाईन में लिखे जाए। जिनका अनुसरण कर बालक बोलने एवं लिखने का अभ्यास कर सकते हैं। इनके कुछ डिजाईन पुस्तक के अगले पृष्ठों पर चित्रित किए गए हैं।
4. कक्षा 3 से 5 के कक्षों में मापन संबंधी चित्र जैसे भार मापन, द्रव का आयतन मापन, समय मापन, कोण मापन, लम्बाई मापन आदि बनवाये जाए। श्यामपट्ट के नीचे व शिक्षक की मेज पर आड़ा स्केल एवं उसका वजन, पिलर या दीवार पर खड़ा स्केल तराजू, प्रचलित बाट, लीटर, घड़ी, दरवाजे के साथ कोण मापक बनवाएँ।
5. दरवाजे एवं खिड़कियों पर अनेक चित्र बालकों की जानकारी हेतु हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामान्य ज्ञान संबंधी बनाएँ जा सकते हैं। इससे खिड़कियों एवं दरवाजों पर पेन्ट होगा एवं सुन्दरता के साथ ये टिकाऊ भी होंगे।
6. कक्षा में लगे पंखों पर अलग–अलग पैटर्न में विभिन्न रंगों से पेन्ट करवाएँ ताकि बालकों को भी रंग तथा उनके संयोजन का ज्ञान हो।
7. कमरों में बालकों द्वारा किए गए कार्यों को टांगने की व्यवस्था करना। जैसे खूंटी लगाकर रस्सी बांधना तथा उस पर उनके कार्यों को चिमटी की सहायता से टांगा जा सकता है।
8. कक्षा 3 से 5 तक की कक्षाओं में अभ्यास घड़ी का चित्र बनाया जा सकता है।
9. यदि कक्ष नया बन रहा है या जंगले जीर्ण–शीर्ण होने के कारण बदलने है तो उनके सरियों के साथ हिन्दी व अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर एवं भिन्नात्मक संख्याएँ उन पर सरियों द्वारा ही बनवाकर लगाए जा सकते हैं। यह कार्य आकर्षक के साथ–साथ स्थायी भी होगा।

बरामदा :–

1. बरामदे की दीवारों पर दृश्य भ्रम के चित्र बनाए जा सकते हैं और ऐसे ही कुछ चित्र फ्लैक्स पर बनवाकर भी लगाए जा सकते हैं। इससे बालकों की बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी एवं इन चित्रों की ओर आकर्षित होंगे।
2. बरामदे के पिलर्स पर खड़े मापक स्केल बनाए जा सकते हैं। इनसे बालक स्वयं की एवं दूसरों की लम्बाई मापने का अभ्यास कर सकेंगे।
3. बरामदे की दीवार के ऊपर वाले भाग में कल्पना शक्ति को विकसित करने वाली कहानियों के चित्र बनाए जा सकते हैं।
4. नई बन रही या मरम्मत के समय फर्श में स्थाई रूप से ज्यामितीय आकृतियां बनाई जा सकती हैं।
5. बरामदे की फर्श पर बालकों के खेल जैसे चोसर, सांपसीढ़ी, लूडो, शतरंज आदि भी बनाएँ जा सकते हैं।
6. बरामदे की दीवारों पर अन्य विषयों से संबंधित चित्र भी बनवाएँ जा सकते हैं। पुस्तक के अगले पृष्ठों पर भी इनसे संबंधित चित्र दिए गए हैं।
7. बरामदों के खम्भों पर भिन्नात्मक संख्या, गणितीय सूत्र, घड़ी व मील पत्थर–एक खम्भे से दूसरे खंभे की दूरी तथा अक्षर चित्र भी बनाये जा सकते हैं।
8. बरामदों की दीवारों पर विभिन्न प्रकार के अभ्यास मानचित्र बनाये जा सकते हैं।
9. बरामदे के साथ रैम्प की रैलिंग में दोनों ओर सॉकिट लगाकर खुला रखे तो बालक टेलीफोन का खेल भी खेल सकेंगे।

चारदीवारी एवं मुख्य द्वार :-

1. बालक को रंग–बिरंगी जगह खूब भाती है। उनका लगाव गहरे रंगों से अधिक होता है। इसलिए मुख्य द्वार एवं चारदीवारी को आकर्षक चित्र एवं मांडणा आदि बनवाकर अधिक सुन्दर बनाया जावे। मुख्य द्वार के दोनों पिलर्स पर बालक एवं बालिकाओं के चित्र बनवाए जा सकते हैं।
2. चारदीवारी के अन्दर के भाग में यदि पिलर्स हैं, तो प्रत्येक पर संख्या व पिलर से पिलर की दूरी लिख सकते हैं।
3. चार दीवारी के अन्दर के भाग में अच्छी आदतों एवं स्वच्छता संबंधी चित्र बनवाए जा सकते हैं।
4. विद्यालय का नजरी नक्शा मुख्य द्वार के आस–पास बनवाए जिसमें उत्तर दिशा अंकित की हुई हो।
5. बालकों की सबसे पंसदीदा चीज कार्टून है, इसलिए कुछ शिक्षाप्रद कार्टून एवं कुछ मजेदार चित्र, कुछ हरियाली को प्रेरित करते चित्र एवं आदर्श वाक्य लिखवाए जा सकते हैं।

आंगन :-

यह विद्यालय का महत्वपूर्ण अंग के साथ बालकों की पंसदीदा जगह है। खुले आकाश में बालकों को खेलने में अधिक मज़ा आता है। इसलिए विद्यालय के आंगन को कई भागों में बांटा जा सकता है :–

1. एक ओर बालकों के खेल उपकरण लगाये जा सकते हैं। जैसे 'फिसल पट्टी, झूला, जपिंग झूला, नेट, रोटेटिंग ड्रम, सी–सॉ एवं अनुपयोगी टायरों द्वारा निर्मित खेल इत्यादि। इस स्थान पर बालू रेत डाला जाना आवश्यक है।
2. पेड़ों के नीचे बालकों को बैठने हेतु ईंट पत्थर आदि से कारीगर द्वारा बैंच बनाई जा सकती है, और पेड़ों के तने पर उनके सामान्य तथा वैज्ञानिक नाम लिखे जा सकते हैं।
3. बाला कार्य करते समय संरक्षित पानी का उपयोग करते हुऐ बगीचा अवश्य बनावें। इसमें औषधीय एवं सजावटी पौधे लगाकर इनकी जानकारी बालकों को कराई जा सकती है तथा बेकार पानी का इसमें उपयोग कर बालकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा सकता है।
4. आंगन के एक ओर कार्टून दीवार, ज्यामिति दीवार, देश/राज्य का नक्शा बनवाया जा सकता है। आगे के पृष्ठों पर इनसे संबंधित चित्र दिए गए हैं।
5. विशेष आवश्यकता वाले बालकों के लिए रैम्प, विशेष शौचालय आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।

रसोईघर :-

1. सौर कूकर–इसका प्रयोग मिड–डे–मिल में चावल–दाल, सब्जी आदि बनाने में किया जा सकता है। इससे पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता एवं ईंधन की भी बचत होती है।
2. उन्नत चूल्हा – यह चूल्हा अन्य चूल्हों से अलग होता है। यह चिकनी मिट्टी व बालू के मिश्रण से बनाया जाता है। इस चूल्हें में लकड़ियां एक बन्द भट्टी में जलती है एवं इस पर 2 से 4 बरतनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अन्दर चिमनी लगी होती है जो धुएँ को रसोई से बाहर निकालती है। इस चूल्हे में लकड़ियों की खपत कम होती है।
3. मिड–डे–मिल, स्वच्छता एवं पोषण से संबंधित जानकारी भी रसोई की दीवार पर होनी चाहिए।

शौचालय :-

1. विद्यालय के शौचालयों पर भी अधिक ध्यान दिऐ जाने की आवश्यकता है। प्रत्येक विद्यालय में लघु मरम्मत की कुछ न कुछ राशि जिला कार्यालय से पहुंचती है। उन्हें अल्प राशि से रिपेयेर कर उपयोगी बनाया जा सकता है।
2. शौचालय की बाहर की दीवार पर स्वच्छता के 7 घटक की जानकारी एवं शौच के बाद साबुन से हाथ धोने के चित्र बनाये जा सकते हैं।
3. छात्राओं के शौचालय में इन्सीनरेटर (प्रयोग में लिये गये सैनेट्री पैड के निस्तारण हेतु) अवश्य बनवाए जावे एवं इसका प्रयोग करना भी छात्राओं को सिखाया जावे जिससे गन्दगी से निजात मिल सकेगी।

इस प्रकार आपके दिमाग में भी ढेंरों विचार पैदा हो सकते हैं जिनके क्रियान्वयन से विद्यालय को बाला के रूप में तैयार किया जा सकता है।

सृजनात्मक बोर्ड

प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए कक्षाओं में कई प्रकार के ब्लैक बोर्ड को सृजनात्मक बोर्ड के रूप में तैयार करवाया जा सकता है:-

1. अभ्यास बोर्ड : कक्षा 1 व 2 के कक्ष में दीवार के सबसे निचली सतह पर कमरे में चारों ओर 24 इंच ऊँचा ब्लैक बोर्ड बनाकर उसके 24–24 इंच के भाग बनाएँ। इस प्रकार एक कक्ष में 15 से 25 तक छोटे–छोटे ब्लैक बोर्ड बन सकते हैं। इन बोर्डों पर निम्न गतिविधियाँ बालकों को अभ्यास के लिए की जा सकती है। :–(अ) विभिन्न प्रकार की लाईने व आरेख (ब) 0 से 9 तक के अंक (स्वर व व्यंजन) (द) अंग्रेजी वर्णमाला (य) विभिन्न आकृतियाँ :–
इनके माध्यम से नव आगन्तुक बालकों से लगभग 2 माह तक इन्हीं बोर्डों पर बिन्दुओं से बने अक्षर या आकृतियों पर चॉक के द्वारा अभ्यास कराया जा सकता है। इससे बहुत कम समय में बालकों में हस्त संतुलन हो जायेगा।

2. लाईन बोर्ड : इस बोर्ड के द्वारा बालकों को अंग्रेजी के अक्षरों को लिखने का अभ्यास कराया जा सकता है। इससे छोटी अंग्रेजी व हिन्दी के अक्षरों के लाईन के ऊपर या नीचे लिखने को भी समझ सकेंगे।

3. स्क्वायर बोर्ड : साधारण बोर्ड में निश्चित दूरी पर खड़ी व आड़ी लाईनें खींच कर इस बोर्ड को बनाया जाता है। इस बोर्ड का प्रयोग बालक निम्न अभ्यास के लिए कर सकता है:–

अ. गिनती व पहाड़े ब. गणितीय संक्रियाओं पर आधारित खेल व पहेलियाँ स. आरेख द. वर्ग पहेली

4. बिन्दु बोर्ड : साधारण ब्लैक बोर्ड पर वर्गाकार पैटर्न में सफेद रंग से सूक्ष्म बिन्दु प्रदर्शित करके बिन्दु बोर्ड बनाते हैं। कक्षा 1 से 2 में इन बिन्दुओं की दूरी 3 इंच तक व अन्य कक्षाओं में इन बिन्दुओं की दूरी 1.5 इंच तक ली जा सकती है। इस बोर्ड पर बालक अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करके अनेक प्रकार के चित्र व पैटर्न बना सकते हैं जैसे :–
(अ) गणितीय ज्यामितियाँ (उनके समान व विपरीत प्रतिबिम्बात्मक आकृतियाँ भी शामिल है।)
(ब) आरेख (स) तरह–तरह के कोण (द) चित्र, डिजाईन व अन्य आकृतियाँ।
इससे छात्रों में कल्पना शक्ति एवं अमूर्त चिन्तन का विकास होता है।

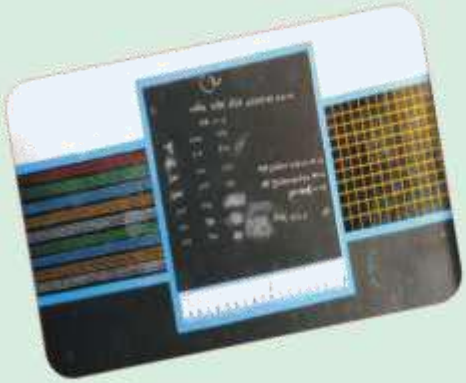

मापक

बालकों में दूरी, वजन (भार), आयतन, समय, कोण आदि के मापने के कौशल विकसित करने के लिए भवनों पर निम्न कार्य करवाए जा सकते हैं :–

1. दूरी मापन : दूरी मापन हेतु निम्न कार्य करवाये जा सकते हैं :– (अ) शिक्षक की मेज पर आड़ा स्केल (ब) ब्लैक बोर्ड के नीचे आड़ा स्केल (स) बरामदे एवं कमरे के पिलर्स, पर खड़ा स्केल (द) पिलर्स एवं आंगन में मील पत्थर। (य) कमरे की दीवार पर लम्बाई–चौड़ाई अंकित करना।
2. समय मापन : बरामदे के पिलर / कक्षा–कक्ष की दीवार पर एक डायल तैयार कर उसके केन्द्र पर ड्रिल करके उसमें स्क्रू पेच के द्वारा तीन सुई (लकड़ी / लोहा / एल्युमीनियम) लगाकर नट से कसी जावें। नट को ढीला कर सुईयों को विभिन्न स्थितियों में प्रदर्शित करके समय मापन का अभ्यास करवाया जा सकता है।
3. भार : कक्षा की दीवार पर तराजू एवं बाजार में प्रचलित बाट (बढ़ते कम में) के चित्र बनाकर विभिन्न भारों को मापने के लिए समस्यात्मक प्रश्नों द्वारा विभिन्न बाटों के प्रयोग का अभ्यास करवाया जा सकता है। (बांटों के लकड़ी या अन्य सामग्री से बने मॉडल भी प्रयोग में लाए जा सकते हैं।)
4. आयतन मापन : कक्षा–कक्ष की दीवार पर द्रव्य के आयतन हेतु प्रयुक्त मापकों के चित्र बनाए जावे। पानी की टंकी, गिलास, जग, बाल्टी आदि पात्रों पर उनकी धारित क्षमता अंकित की जा सकती है।

कोण : कक्षा–कक्ष के दरवाजे के साथ फर्श पर चाँदा निर्माण करवाया जा सकता है। इस पर दरवाजे के खुलने व बन्द होते समय बनने वाले विभिन्न कोणों का अभ्यास करवाया जा सकता है। चित्र को स्थाई करने के लिए फर्श में मिस्त्री द्वारा कटिंग के निशान बनवाकर उन पर पेन्टर द्वारा पेन्ट किया जा सकता है। कोण मापन में खिड़की का भी प्रयोग किया जा सकता है।

दरवाजे के पास दीवार पर खड़ा मापक स्केल

विद्यालय में विभिन्न जगहों की दूरी को बताने वाले मील पत्थर

दरवाजे के साथ फर्श पर कोण मापक

शिक्षक की मेज पर आड़ा मापक स्केल

खिड़की में कोण मापक

दीवार पर समय मापक

फर्श का बाला में उपयोग

विद्यालय भवन में सबसे बड़ा क्षेत्र फर्श का आता है। बरामदे व कमरे में फर्श सीमेंन्ट, कंकरीट, कोटा स्टोन, मार्बल, सेन्ड स्टोन आदि की होती है। यदि फर्श का रिपेयर वर्क हो रहा है या बन रही है तो उसी समय सीमेंन्ट कंकरीट की फर्श कारीगर द्वारा शिक्षक की उपस्थिति में अलग–अलग रंगों से विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ, हिन्दी व अंग्रेजी वर्ण माला के अक्षर, विभिन्न प्रकार की रंगोली व अन्य चीजें स्थाई रूप से बनाई जा सकती है।

मार्बल, कोटा स्टोन, टाइल्स से फर्श बनाते समय इनका संयोजन विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों व खेलों को ध्यान में रख कर किया जावे। कुशल कारीगरों द्वारा खगोलीय घटनाओं एवं कठिन ज्यामितीय आकृतियों को चित्रानुसार कटर से काटकर उस स्थान पर अलग–अलग रंगों में चिप्स डालकर पिसाई करने से ये आकृतियाँ उभर कर प्रदर्शित हो जायेगी व विद्यालय की फर्श बालकों के लिए पुस्तक का कार्य करेगी। बालक खेल–खेल में आयत व वर्ग में अन्तर करते नज़र आयेंगे।

ये कार्य पेन्टर द्वारा भी कराए जा सकते हैं। बरामदे की फर्श में साँप सीढ़ी, लूडो, चौसर एवं बालिकाओं के खेल बनाए जा सकते हैं।

चबूतरे की फर्श पर गणितीय खेल

बरामदे की फर्श पर स्थाई ज्यामितीय आकृतियाँ

बरामदे की फर्श पर खगोलीय घटना

फर्श पर बालिकाओं का खेल

शिक्षाप्रद कहानियों के चित्र एवं जन्म दिन बोर्ड

कहानियाँ बालकों को सबसे प्रिय लगती है व बालक इनकी ओर सहज आकर्षित होते है। बालक की प्रारम्भिक पाठशाला परिवार होता है। इसमें बालकों को दादा-दादी, नाना-नानी व अन्य बड़े बुजुर्गों द्वारा कहानी सुनने में अधिक आनन्द आता है।

कक्षा-कक्षा, बरामदे तथा चारदीवारी की दीवारों के खाली स्थान पर पेन्टर द्वारा विभिन्न शिक्षाप्रद कहानियों के चित्र बनाए जा सकते है। कहानियों के चित्र बनवाते समय यह ध्यान रखा जावे की चित्र संयोजन बालकों की कल्पना शक्ति के विकास में सहायक हो। कहानियों में जहाँ तक हो सके शब्द नहीं लिए जावे तथा चित्रों की सहायता से बालक स्वयं ही कहानी का विकास करें। कहानी बालकों को नैतिक व सामाजिक शिक्षा प्रदान करने वाली हो। प्रत्येक कहानी की चित्र श्रृंखला के अन्त में व्यक्त नैतिक शिक्षा कम से कम शब्दों में लिखी जावे। इससे बालकों का मनोरंजन एवं कल्पना शक्ति, मौखिक अभिव्यक्ति, भाषा के उच्चारण की शुद्धता एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास होगा।

इनके चित्र बरामदे एवं कमरे में दीवार के ऊपर वाले भाग में बनवाए जा सकते है क्योंकि इनमें बालकों द्वारा हाथ से कार्य करने के लिए कुछ भी नहीं है। यहाँ केवल देखना होता है।

कार्टून छोटे बालकों का सबसे प्रिय विषय होता है। बालकों के स्तरानुसार उनके कक्ष के आस-पास शिक्षाप्रद कार्टून आकर्षण का केन्द्र रहेंगे।

प्रार्थना स्थल पर जन्मदिन का बोर्ड बनाया जा सकता है। महान पुरूषों का एवं स्वयं का व शिक्षकों का जन्म दिन बालक सहज ही याद कर सकेंगे बल्कि पूर्व से तैयारी करके भी आयेंगे।

खेल–खेल में गणित

खेलना बालकों की सहज प्रवृत्ति है प्रत्येक आयु वर्ग का बालक खेलना पसन्द करता है। अत: गणित जैसे कठिन विषय को खेल द्वारा आसानी से सहज अधिगम योग्य बनाने के लिए बाला के कक्षा-कक्ष, बरामदे व चारदीवारी की दीवारों पर गणित से संबंधित खेल बनवाए जाने चाहिए। जैसे:

1. दीवार पर मछली वाला खेल : यह खेल कक्षा 1 व 2 के कक्ष में बनाया जा सकता है। इसमें अलग–अलग रंगों की मछलियाँ बनाई जाए। इसमें बालकों से अलग–अलग रंग की मछलियों की संख्या, बालक लिख सकें। बालक इससे खेल–खेल में गणित सीखेंगें, रंगों का ज्ञान भी होगा एवं इस दृश्य से आकर्षित भी होंगे।
2. गिनती कार्टून : चित्रानुसार 1 से 50 तक व व 51 से 100 तक गिनती कार्टून बनाया जाए। इसमें सम व विषम संख्या अलग–अलग रंगों में प्रदर्शित की जावे। इसके माध्यम से बालक गिनती सीख सकेगा एवं सम व विषम संख्याओं का ज्ञान कर सकेगा। साथ ही रंगां का ज्ञान भी होगा।
3. कटवां गिनती : चित्रानुसार 1 से 100 तक अक्रमिक रूप से चौखानों में गिनती लिखी जाए एवं चौखानों में जो रंग किया जावेगा उपरोक्तानुसार सम व विषम चौखाने का ध्यान भी रखा जावे।
4. गुणा व भाग वृक्ष : चित्रानुसार एक गुणा वृक्ष कक्षा–कक्ष में बनवाया जावे जिसमें एक टहनी पर गुणा व भाग हल कर दिए जावे तथा शेष पर केवल प्रश्न दिए जावे व बालकों को उन्हें हल करने हेतु स्थान दिया जावे। इससे बालक खेल–खेल में गणित सीखेगे एवं आपसी प्रतिस्पर्धा भी बढ़ेगी कि किस बालक ने पहले प्रश्न हल किए।
5. गणितीय ज्यामितीय रोबोट : शाला में दीवार पर चित्रानुसार ज्यामितीय रोबोट बनाकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जा सकते हैं जैसे :–चित्र में आयत, वर्ग, त्रिभुज, वृत्त, पंचभुज व अन्य आकृतियों की संख्या विभिन्न रंगों वाली आकृतियों के नाम पूछे जा सकते हैं। इसे खिड़कियों में सरियों के द्वारा स्थाई भी बनवाया जा सकता है।
6. गुणा करो आगे बढ़ो : चित्रानुसार (चित्र अगले पृष्ठ पर) यह खेल कई स्तरों में बाँटा गया है। जिसमें बालक प्रारम्भ में सरल गुणा करता हुआ एक से दूसरे स्तर तक पहुँचता हैं। इससे वह खेल–खेल में सरल से कठिन गुणाओं को करने के प्रति स्वयं ही आकृष्ट होता है। इससे बालकों में प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होगी। यह तीसरी से पाँचवी तक के लिए है।
7. भार मापन व धारिता मापन : इस चित्र द्वारा बालक विभिन्न इकाईयों के मध्य संबंध को समझ पाते हैं। इससे उन्हें एक इकाई को दूसरी में बदलने में भी मदद मिलती है।
8. रोमन संख्या (बरामदे के खम्भे पर) : यह चित्र में बालकों को रोमन संख्या के समान सामान्य गणितीय अंको को पहचानने में मदद करता है। इससे वे सामान्य संख्या को रोमन में व रोमन संख्या को सामान्य में बदल पाएंगे।
9. भिन्न : इसके चित्र में विभिन्न भिन्नों को संक्षिप्त में परिभाषित कर उनके कुछ उदाहरण दिए जाने चाहिए।
10. अजगर का खेल : चित्रानुसार अजगर में क्रमशः अंक लिखे जाते हैं तथा बीच–बीच में दो या तीन भिन्न जानवर बनाकर प्रश्न में उनके द्वारा एक बार में लगाई गई छलांग की दूरी बताई जाती है। फिर इस पर आधारित प्रश्न किए जाते हैं जिससे बालकों को खेल–खेल में ही गुणनखण्ड की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

गणितीय अभ्यास चित्र

प्रांगण में खुले कक्षा-कक्ष एवं पेड़ों के नीचे बैठने हेतु बैंच

विद्यालय की सीढ़ियों का उपयोग

विद्यालय में बालकों के आकर्षण केन्द्र

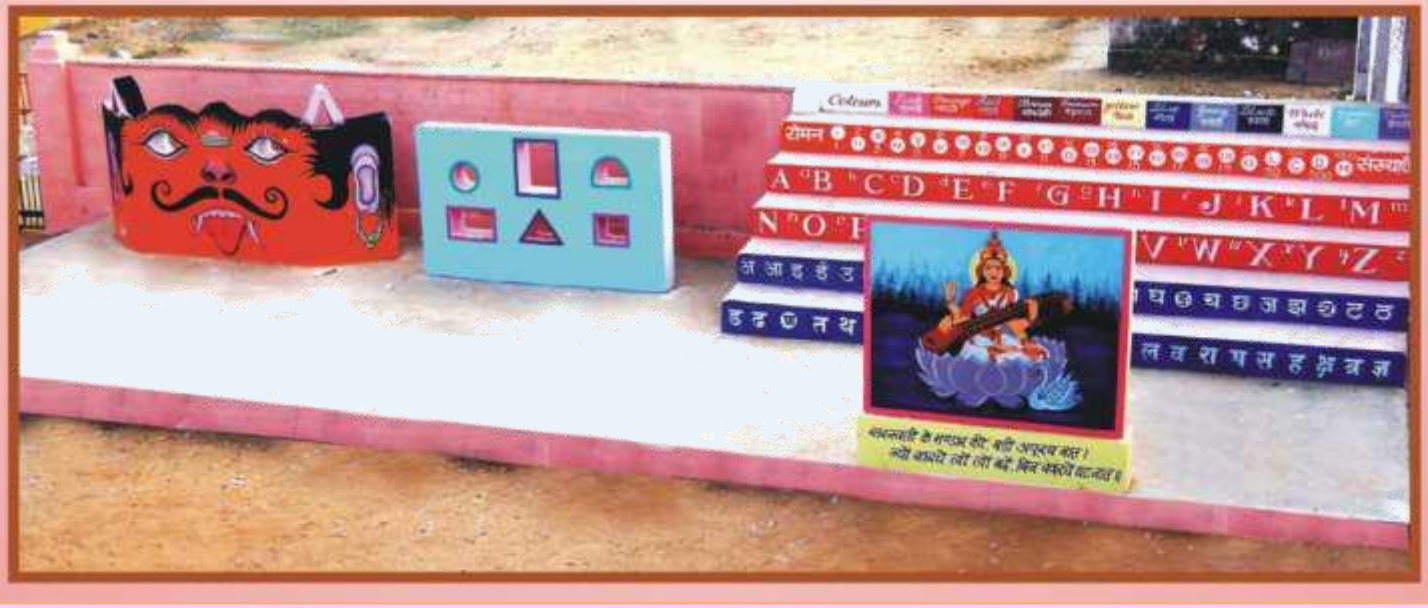

खिड़कियों एवं बरामदे की दीवारों का उपयोग

विद्यालय में अन्य आवश्यक बोर्ड

विद्यालय में प्रत्येक सूचना सम्बंधी बोर्ड बनाऐ जा सकते हैं।
जैसे संस्थापन विवरण, मिड–डे–मील,
विद्यालय में सुविधाऐं व अन्य सरकारी योजनाऐं।
महान् व्यक्तियों द्वारा कहे जाने वाले शिक्षाप्रद वाक्य लिखवाए जा सकते हैं।

चार दीवारी व मुख्य दरवाजा

चारदीवारी एवं मुख्य दरवाजा

भवन को सुरक्षित रखने के साथ–साथ चारदीवारी का बाला में भरपूर उपयोग किया जा सकता है। विद्यालय वातावरण को शिक्षण उपयोगी बनाने व बालकों में विद्यालय के प्रति सहज आकर्षण उत्पन्न करने के लिए चारदीवारी का निम्नानुसार उपयोग किया जा सकता है।

1. भवन के मुख्य दरवाजे को रंग–बिरंगा कर आकर्षित बनाया जाए।
2. चारदीवारी पर कार्टून, प्रतिज्ञा, प्रार्थना, आदर्श वाक्य, सूचनाएँ, बच्चों के अधिकार आदि लिखें जाए।
3. अच्छी आदतें : शाला स्वच्छता, जल संरक्षण, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, पर्यावरण इत्यादि
4. वातावरण में उपस्थित विभिन्न प्रकार के चक्र जैसे – जल चक्र, कार्बन डाई ऑक्साइड चक्र, जन्तुओं व पौधों का जीवन चक्र इत्यादि।
5. महापुरूषों एवं सर्व धर्म से संबंधित चित्र।
6. यातायात के नियम।
7. आपातकालीन सेवाओं के फोन नम्बर।
8. दीवार पर बालकों के उपयोग हेतु ब्लैक बोर्ड बनाए जावें। जिस पर प्रतिदिन कक्षा का एक बालक कोई ज्ञान वर्धक बात लिखेगा।
9. मुख्य दरवाजे पर स्वागत चित्र होना चाहिए।
10. चारदीवारी में स्थित खम्बे तथा मुख्य द्वार पर सार्थक रंग संयोजन होना चाहिए। जैसे–तिरंगा या इन्द्र धनुष आदि। जिससे दीवारों की नीरसता भंग होगी तथा वे बालकों को अपनी ओर आकर्षित करेगी।

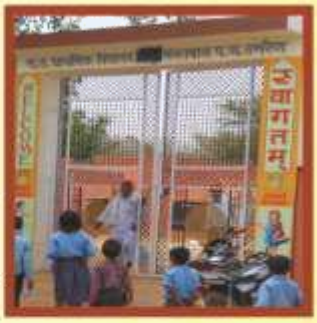

कक्षा-कक्ष के दरवाजों का उपयोग

कक्षा-कक्ष के दरवाजों पर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक चित्र बनाकर इनको सीखने हेतु तैयार किया जा सकता है।

पंखों द्वारा रंगों की जानकारी

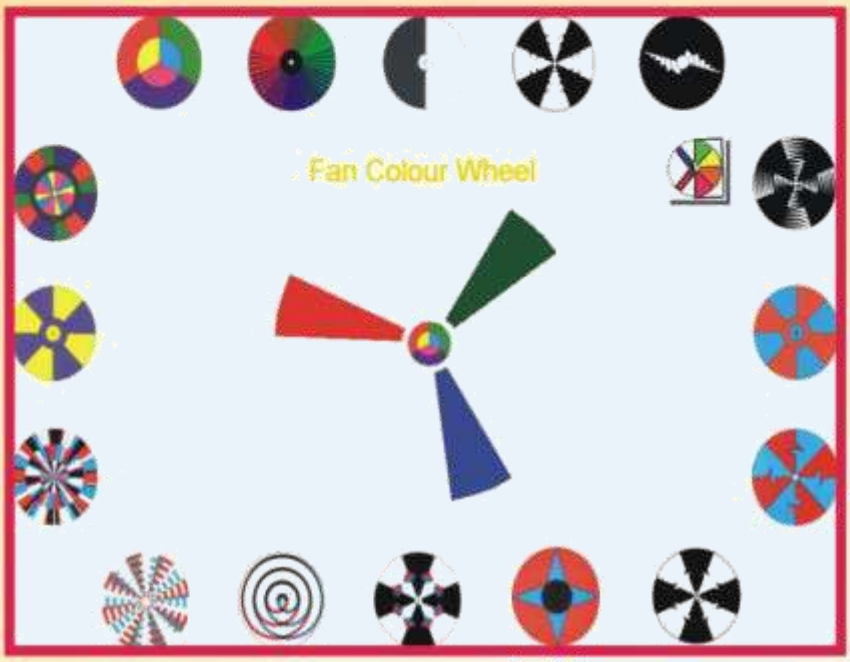

विभिन्न संरचनाऐं बनाकर आंगन का उपयोग

प्राथमिक विद्यालय पटवध में BaLA का प्रयोग

स्वच्छ भारत मिशन
के अन्तर्गत निर्मित
स्कूल शौचालय
प्राथमिक विद्यालय-पटवध (प्रथम)
विकास खण्ड-चोपन, जनपद-सोनभद्र
बालिका
बालक
क्या आप जानते हैं ? हाथों की सफाई
पानी से हाथों को गीला करना।
साबुन का उपयोग।
थोड़ी देर हाथों को आपस में रगड़ना।
नाखूनों में जमी मैल एवं अंगुलियों को साफ करना।
बहते हुए पानी से हाथ धोना।
साफ तौलिये से हाथों को पोंछना।
कूड़ेदान का प्रयोग करें।
कूड़ेदान
पंचायती राज विभाग-सोनभद्र
शौचालय

स्वच्छ भारत मिशन
के अन्तर्गत निर्मित
स्कूल शौचालय
बालक
कूड़ेदान का प्रयोग करें।
कूड़ेदान
स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें।
स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत
निर्मित
शौचालय

प्यासा
कौआ

विश्व योग दिवस
21 जून
जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,

Y
A
R
I
N
J
M
Z
Q
B
V
S
G
O
L
E
C
T
X
F
D
H
K
P
W
U

We
Love
Meena
very
Much

तबला
तबला
तबला

DRDO
(रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन)
अग्नि-I
मारक दूरी-700 K.M.
अग्नि-II
मारक दूरी-2000 K.M.
अग्नि - III
मारक दूरी-3000 K.M.
INDIA
अग्नि-IV
मारक दूरी-3200 K.M.
भारत
अग्नि - V
मारक दूरी- 5000 K.M.+
अपने मिशन में कामयाब होने के लिए,
आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित्त
निष्ठावान होना पड़ेगा।
मिसाइल मैन
ए.पी.जे.अब्दुल कलाम (पूर्वराष्ट्रपति)
जन्म-15 अक्टूबर 1931, रामेश्वरम
मृत्यु-27 जुलाई 2015 शिलांग मेघालय

A B C D E F G H I J K L
M N O P Q R S T U V W X
Y Z

सेव
आम
संतरा
केला
अंगूर
अनार

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श
ष स ह क्ष त्र ज्ञ

छाया और ग्रहण
सूर्य
पृथ्वी
चन्द्रमा
सूर्य
चन्द्रमा
पृथ्वी

महत्वपूर्ण अधिकारियों के फोन नं.

निदेशक मध्याह्न भोजन प्राधिकरण-9453004 00

जिलाधिकारी-	9454417569
मुख्य विकास अधिकारी-	9454465137
मुख्य चिकित्सा अधिकारी-	9415243543
पुलिस अधीक्षक-	9454400304
उपजिलाधिकारी-	9454416845
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी-	9453004197
खण्ड विकास अधिकारी-	9454465135
खण्ड शिक्षा अधिकारी-	8765959090
जिला समन्वयक (एम.डी.एम.)-	9453004198
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र-	9454158675
ग्राम प्रधान-	7897605009
एम.डी.एम. टोलफ्री-	1800-300-28101
	1800-1800-666

आपात कालीन नं:- पुलिस-100, एम्बुलेंस-108
चाइल्ड हेल्प लाइन-1098, फायर सर्विस-101
महिला हेल्प लाइन-1090

बाल अधिकार

- 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को पड़ोस के विद्यालय में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार।
- कक्षा 1-8 तक कैपिटेशन फीस एवं अन्य सभी शुल्क प्रतिबंधित।
- 6-14 वर्ष के विद्यालय न गये बच्चों आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश व विशेष प्रशिक्षण का अधिकार।
- प्रवेश के लिए जन्म/आयु प्रमाण पत्र की बाध्यता नहीं।
- एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में कभी भी स्थानांतरण का अधिकार, स्थानांतरण प्रमाण पत्र की बाध्यता नहीं।
- बच्चों को कक्षा में रोके जाने, विद्यालय से निकाले जाने पर रोक, बोर्ड परीक्षा नहीं।
- कक्षा 1-8 तक सभी बच्चों को गर्म पका-पकाया मध्याह्न भोजन।
- विद्यालय विकास अनुदान के रुप में प्राथमिक विद्यालय हेतु रु. 5000/ तथा उच्च प्रा० वि० हेतु रु० 7000 वार्षिक।
- स्वच्छ पेयजल और बालक-बालिका हेतु पृथक-पृथक शौचालय।
- शारीरिक दण्ड व मानसिक प्रताड़ना पर रोक।
- अल्पसंख्यक समूह एवं दुर्बल वर्ग के बच्चों से भेदभाव पूर्ण/अलगाववादी व्यवहार वर्जित।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विशेष शिक्षा सहायक सामग्री एवं उपकरण आदि की निःशुल्क व्यवस्था।
- विद्यालय में जाति, वर्ग, धर्म अथवा लिंग आधारित दुर्व्यवहार/भेदभाव रहित वातावरण।
- बच्चों के विद्यालय आने के लिए सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण बाधा नहीं।

अन्य सुविधायें-

- निःशुल्क किताबें एवं यूनीफार्म।
- पक्का सुरक्षित विद्यालय भवन।
- प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षण।
- विद्यालयों के रख-रखाव हेतु मेन्टीनेन्स ग्राण्ट।
- विद्यालयों के संचालन हेतु स्कूल ग्राण्ट।
- पिछड़े 746 विकास खण्डों में विद्यालयी शिक्षा से वंचित बालिकाओं के लिए कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा के लिए आवासीय कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों का संचालन।
- दृष्टि एवं श्रवण अक्षम बच्चों के लिए 10 माह के आवासीय शिविर का संचालन।

शान हमारी,
बिमारी।
खोटा,
अपनी इज्जत आप बचाओ,
नहीं शौच को बाहर जाओ।
मूंगफली में गोटा,
छोड़ दो लोटा ।
बाहर शौच काम है गन्दा,
बन्द करो ये मिलकर धन्धा।
बाहर नहीं शौच को जाना,
शौचालय अपना बनवाना।
लोटा-बोतल बन्द करो,
शौचालय का प्रबन्ध करो।
खुली जगह में शौच न जायें,
बिमारियों को न फैलायें ।

आओ खेले
गिल्ली डंडा

SMART CLASS ROOM
कक्षा 2

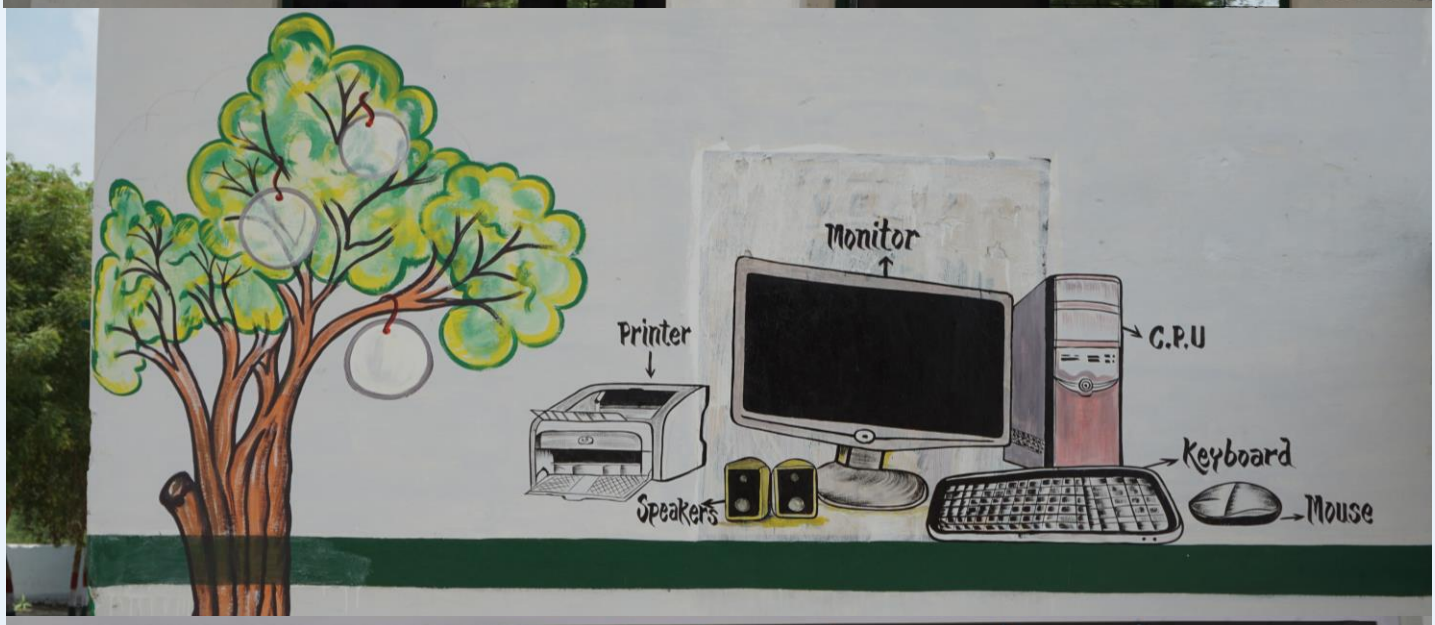
Monitor
Printer
C.P.U
Keyboard
Mouse
Speakers

Mars
Uranus
Neptune
Venus
Jupiter
Earth
Saturn
Mercury

सोलर आर.ओ. प्लान्ट
क्षमता - 50 ली. प्रति घण्टा
लागत मूल्य - 259000/ रु.
स्थापना वर्ष - 2014 - 15
कार्यदायी संस्था - यू.पी.नेडा, सोनभद्र
• शुद्ध पेय जल •
मानो तुम मेरा कहना
शिक्षा से तुम दूर न रहना।
स्वयं पढ़ें
औरों को भी पढ़ाएँ।

मार्ट क्लास
कक्षा 1

रानी भी
मिठाई
शरबत
चावल

पुस्तकालय
0
कि॰ मी॰
पुस्तकालय

MATH
READING
SCIENCE
HISTORY
READING

मई
जून
✓ बचाना
पानी
✓ धुले हाथ
× गन्दे हाथ
भोजन
× खुले
✓ शौचालय
शौच
✓ डस्टबीन
× सड़क
मार्च
अप्रैल

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम
राष्ट्रपति - श्री रामनाथ कोविंद
प्रधानमंत्री- श्री नरेन्द्र मोदी
राज्यपाल- श्री राम नाईक
मुख्यमंत्री- श्री योगी आदित्य नाथ
मीना
देश के प्रमुख शहरों के नाम
नई दिल्ली मुम्बई
कोलकाता बेंगलुरु
चेन्नई जयपुर
उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों के नाम
लखनऊ कानपुर
इलाहाबाद वाराणसी
गोरखपुर आगरा

वन
आम पक गए।
वन लद गए।
हर तरफ तब,
फल सब महक गए।

स्कूल जाने से छूटे न कोई बच्चा।
आपका यह सहयोग होगा देश के लिए
विकसित राष्ट्र की कल्पना,
शिक्षित पूरे देश को करना